महाकवि महेश कृत 'जनरामायन'

–डॉ. परेश कुमार पाण्डेय
एसो.प्रो. हिन्दी विभाग
का.सु. साकेत पी.जी. कालेज, अयोध्या

राम भारतीय संस्कृति के पर्याय एवं मूलाधार हैं। देश के अनेक महान चरित्रों में वे अन्यतम हैं। यहाँ की सनातन संस्कृति ने समय–समय पर उनके चरित्र का रूपायन एवं गायन किया है– 'हरि अनंत हरि कथा अनंता।' वे मर्यादा–पुरुषोत्तम के रूप में यहाँ के जन–मन में रमे हुए हैं। राम की जनप्रिय, लोकप्रिय कथा हिन्दी–प्रदेश की विविध उपभाषाओं व बोलियों में ही नहीं अपितु विदेशों में भी लोकप्रिय रही है।

हरि की यह अनंत कथा महाकवि महेशप्रतापनारायण अवस्थी की स्फुट लेखनी के माध्यम से अपने सशक्त रूप में निःसृत हुई है। आधुनिक युग के रामनरेश त्रिपाठी महेश जी ने इसमें विभिन्न विषयों एवं विभिन्न छन्द विधाओं का संस्पर्श किया है।

शताधिक वर्ष पहले कभी तुलसीदास ने एक सराहनीय प्रयास किया था– भगवान् राम की कथा को जनभाषा में जन–जन तक पहुँचाने का, उसमें वे कृतकाम भी हुए; परन्तु महेश जी ने और भी 'गाँव–गवई' का होकर भगवान राम के चरित्र को अद्‌भुत सहजता प्रदान कर एवं भाषा को असाधारण रूप से साधारण बनाकर रामकाव्य को हृदयग्राही बना दिया है।

किसी भी निश्चित सीमा–परिसीमा में बँधा हुआ काव्य तब तक महाकाव्य की संज्ञा प्राप्त नहीं कर सकता जब तक वह 'महान–काव्य' न हो। वैसे भी हमारे पूर्ववर्ती शास्त्रकारों ने महाकाव्य को इतनी कसौटियों पर कस दिया है कि कोई साधारण काव्य महाकाव्य हो भी नहीं सकता। महाकाव्य के लिए उदात्त कथानक, चरित्र, सन्देश एवं शैली का होना आवश्यक है।

महाकाव्य की कथावस्तु इतिहास से ग्रहीत या किसी सज्जन महापुरुष की जीवन गाथा पर आधारित होती है। यह 'रामायन' उपर्युक्त दोनों शर्तों को पूर्ण करती है। इसमें भगवान् राम के जीवन की विविध कथाएँ संकलित हैं। उनके जन्म, विविध संस्कार, बाललीलाओं, आश्रम–प्रस्थान, धनुर्भंग, विवाह–प्रसंग, वनगमन, अनेक राक्षसों सहित रावण–वध, पुनश्च राजतिलक, अन्यान्य पुण्य कार्य एवं महान् अश्वमेध यज्ञादि का वर्णन इस 'जनरामायन' में हुआ है।

आलोच्य महाकाव्य आठ काण्डों (बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड, लवकुश काण्ड) एवं अठारह सर्गों में विभक्त है। इसे अध्यायों में भी बाँटा गया है। इसके प्रारम्भ में गौरी–गणपति, शिव, विष्णु, ब्रह्मा, वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, कम्बन, कृत्तिवास, तुलसी से लेकर महाकवि मैथिलीशरण गुप्त तक की अभ्यर्थना–अर्चना की गयी है। 'ग्रंथादौ ग्रंथमध्ये ग्रंथान्ते तु मंगलम्' की परम्परा का पालन करते हुए यहाँ कवि ने ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति हेतु विविध देवों एवं सिद्ध कवियों की वन्दना की है–

जिन्ह सुमिरन सुभ सोह, गनपति गौरि कृपायतन।
करहु कृपा करि छोह, पावउँ प्रभु पद प्रीति भलि।।
बन्दउं सब सुखधाम, भानु विष्नु कुलदेव सिव।

कहउं कथा अभिराम, मिलइ जनहि सुभगति सुमति।।
बन्दउँ परब्रह्म परमेश्वर, जेहिते सकल सृष्टि रचि जाइ।
पुनि गुरु चरनन्ह सीस नवावउं, ग्यानरासि मिलि सहज सुहाइ।।
बन्दउं बालमीकि द्वैपायन, कालिदास भवभूति महान।
कम्बन कृत्तिबास कबि तुलसी, सिरस मैथिलीसरन सुजान।।
हर सर्ग के अन्त में आगामी सर्ग की सूचना भी है।

महाकाव्य का नायक कोई देवता या उच्चकुलोत्पन्न क्षत्रिय होना चाहिए। राम विश्वविख्यात उच्चकुल में पैदा हुए क्षत्रिय थे–

अवधपुरी महिमा अमित जहाँ बसहि रघुबंस।
उत्तर दिसि सरजू सरित सब जन करहिं प्रसंस।।

यद्यपि महाकवि महेश ने राम को तुलसी की भाँति ईश्वर का अवतार नहीं माना फिर भी उनके मर्यादावादी मानवीय स्वरूप में प्रत्येक दैवीय गुण स्पष्ट परिलक्षित होता है, इसमें किंचित सन्देह नहीं। राम धीरोदात्त नायक हैं। नाना सद्वृत्तियों से मिलकर उनके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है, वे दुष्प्रवृत्तियों के लिए काल स्वरूप है।–

'सत्यसन्ध अतिसय सन्तोषी अनसूई अउ सीलनिधान।
कला प्रेम साहित्तिक अभिरुचि सामवेद हित बिमल बिचार।।'

उनके व्यक्तित्व के ये शील–गुण किसी आदर्श महापुरुष के शाश्वत मानक बन गये हैं।

'जनरामायन' नानाविध मनोभावों–वृत्तियों का आगार है– अतः कोई भी ऐसा रस शेष नहीं है जो इसमें अप्राप्य हो। तीनों प्रधान रस श्रृंगार, वीर एवं शान्त के साथ ही साथ अन्यान्य रस भी प्रचुर मात्रा में हैं। 'जनरामायन' रस का सागर है, इसमें कोई अत्युक्ति नहीं।

संयोग श्रृंगार की एक छटा द्रष्टव्य है–

'सिया संग सियपति नित बिहरहिं, निज असोक बनिका महँ जाइ।
तहँ कै प्रकृति छटा अति अद्भुत, दून्हउ जन बैठहिं बतराइ।।
बैदेही के मुख पियरउछी, भारी पाँव चलत घहराहिं।
राम करहिं नित उनके मनकै, कवनिउ बिति के किल्लति नाहिं।।'

मानस में राम के विरह में किंचित् कृत्रिमता भी है परन्तु यहाँ राम का विरह गाँव के 'बिदेसिया' गीत की तरह सहज और मार्मिक है, यद्यपि उस पर प्रभाव मानस का ही है–

'बिरवन्ह–बिरवन्ह ते पूछहिं कहँ गवनी जहँ तहँ रघुकुलनाथ।
कहहु कदम्ब, पुहुपप्रिय सीता कहँ गवनी करि तोहिं अनाथ।।'

वीर रस का उत्साह भी कुछ कम सराहनीय नहीं है–

'छप छप छप छप तेंगा बोलहिं, सर सर सर सर सर सन्धान।
घरर घरर घर रथ बहु डोलहिं, चिग्घारहिं मदमत गजराज।।'

अन्यान्य विविध प्रसंगों में जिन अन्य रसों का वर्णन हुआ है, वे इस प्रकार है–

रौद्र रस–

'राम रावना जुद्ध, राम रावना जुद्ध सम।
दून्हउ जोधा क्रुद्ध, मनहु जुद्धरत काल दुहि।।'

भयानक रस–

'धीर बीर दुख सुख सम समुझहिं, जानहिं जीवन मरन समान।
आत्माराम मरहिं ना कबहूँ, साँख्य सास्त्र मुनि कीन्ह बखान।।'

'जनरामायन' में जीवन के विविध पक्षों का सुन्दर एवं ह्रदयस्पर्शी वर्णन है। छोटे से छोटा क्रियाकलाप भी कवि की आँखों से ओझल नहीं हुआ है। पुत्र–जन्म के पश्चात् के समस्त संस्कार जैसे षष्ठी, बरही, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन इत्यादि सभी का 'जनरामायन' में वर्णन है। विवाह–संस्कार के अन्तर्गत सभी क्रियाकलापों यथा–द्वारपूजा, कन्यादान, ब्याहभात, कलेवा, शिष्टाचार, विदाई आदि का अपने मौलिक एवं यथार्थ रूप में वर्णन किया गया है। जीवन से मृत्यु तक की सभी अवस्थाएँ इसमें वर्णित हैं। ये सभी वर्णन इतने सजीव लगते हैं मानों हम उस समारोह, उस स्थान, उस अवस्था में सशरीर विद्यमान हों और अपने इन्हीं नेत्रों से उसका रसपान कर रहे हों। बरही का एक बिम्बात्मक चित्रण यहाँ द्रष्टव्य है–

दिन बरहें बरहौं बहुरि आई नापित नारि।
सुनत जननिन्ह उबटन करहिं नहुवावहिं लइ बारि।।

इसी प्रकार कुमारों के मुण्डन एवं कर्णवेध का कवि ने मार्मिक वर्णन किया है–

'तीन बरष बीते जबहिं, बाढ़े कछुक कुमार।
मूंडन–टूंडन के भए, लोक बेद व्यवहार।।
तेहि पीछे कनछेदन, नापित कीन्हिसि आइ।
नेग पाइ नेगी चले, करत प्रसंस सुहाइ।।'

कहीं 'चलत बकइयाँ राजकुमार' के रूप में सुन्दर वात्सल्य भाव का भी चित्रण किया है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थलों के वर्णन–प्रसंग भी अत्यन्त मनोहारी बन पड़े हैं। इस वर्णन के माध्यम से वहाँ की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का भान भी सरलता से हो जाता है। इस वर्णन–प्रसंग में शायद ही कोई पात्र या वस्तु हो जो दृष्टि से ओझल रह गयी हो। अयोध्या–वर्णन के रूप में कवि का वस्तु वर्णन अद्भुत एवं सराहनीय है–

'नर नारी नित जग्य करहिं अउ बाँचहिं बेद सकल परिवार।
गाजर, गंजी, सूरन, बंडा, घुइयाँ खाइ लोक हरषाइ।।
थान–थान पर होहिं अखाड़ा, पहलवानी कै भूत सवार।
साज सजावहिं हाट–बाट सब नर नारी अति चतुर सुजान।
ऊंचि एकते एक अटरिया, जिन पइ सदा धुजा फहराइ।।
पुहुपन्ह के उद्यान ललित अति, जिन महँ सुमन सदा सरसाहिं।।
गृहिनी गिट्टी गोटवा खेलहिं, खेल कबड्डी बाल जुआन।
ऊंच नीच कै भेदभाव नहिं, एकहिं ईश्वर के सब अंस।।'

अयोध्या वर्णन, सिद्धाश्रम वर्णन, मिथिला वर्णन, श्रृंगवेरपुर वर्णन, प्रयाग वर्णन, श्यामवट वर्णन, चित्रकूट वर्णन, पंचवटी वर्णन, किष्किंधा वर्णन एवं लंका वर्णन आदि सभी स्थलों पर यही रोचकता है। कवि के वस्तु–वर्णन सर्वत्र मनोहारी, सजीव एवं यथार्थ बन पड़े हैं।

अरण्यकाण्ड के प्रथम सर्ग में सभी ऋतुओं का रम्यरंजक वर्णन किया गया है। चूँकि महेश जी सिद्ध कवि हैं, अतः लोकसंस्कृति को उन्होंने अपने इस महाकाव्य में विशेष स्थान दिया है–

भयउ असाढ़ सुकुल पख पूनो। गुरुपद प्रेम बढ़इ नित दूनो।।
सावन केर मास सुखदाई। नव ब्याही बिटिया घर आई।।
भादवँ भामिनि भावहिं भारी। कजरी तीज रहहिं व्रत नारी।।
पूजहिं मुदित महेस भवानी। पति प्रति प्रेम परम सुख खानी।।

अब बात आती है नामकरण की। महेश जी जन–जन से जुड़े हुए एक जन हैं तदुपरान्त कवि भी। उनकी इस रचना का उद्देश्य सर्वजन–बहुजन के लिए राम एवं उनके चरित्र से जुड़ी अन्यान्य घटनाओं, क्रियाकलापों को बोधगम्य बनाना है। उन्होंने इसके लिए ही राम को मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। वे स्वयं स्वीकारते हैं '....मैंने मानव के रूप में ईश्वर का अवतरण उचित नहीं समझा, प्रत्युत मानव को ही आरोहण कर भगवान् के पद पर प्रतिष्ठित होते हुए देखा है। यही मानव जीवन की चरम सार्थकता भी है।' इस 'जनरामायन' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करते हुए वे कहते हैं– 'जनरामायन' का अभिप्राय मुझ एक साधारण जन द्वारा रचित रामायण, जन की रामायण या जनभाषा (अवधी) की रामायण है।'

इसके अतिरिक्त राम का बहुआयामी चरित्र एवं उनके जीवन की समस्त घटनाएँ इसमें वर्णित ही हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आप स्वयं चाहें तो इसे सरलता से नामकरण की कसौटी पर कस सकते हैं–कवि के नाम पर, नायक के नाम पर, कथातत्त्व के आधार पर– यह सभी खाँचे में 'फिट' बैठता है।

'जनरामायन' मानव–मूल्यों की बारहखड़ी से लेकर आचार–संहिता तक सब कुछ है। इसमें अनुस्यूत आदर्शों को ग्रहण कर प्रत्येक मानव विश्व–कल्याण कर सकता है। आज का मनुष्य पतन के गर्त में जा रहा है। उसके नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। उसकी सोच के दायरे संकुचित होते जा रहे हैं। वह मनुष्य जीवन का वास्तविक लक्ष्य भूल बैठा है। मानसकार ने कहा है–

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन गावा।।

ऐसे दिग्भ्रमित मानव को संज्ञान सुलभ कराने के लिए ही 'जनरामायन' की रचना की गयी है। इसमें बताया गया है कि धैर्य, क्षमा, करुणा, समता, विवेक, त्याग को अपने जीवन में उतारकर कोई भी व्यक्ति ईश्वर का पद पा सकता है। इसमें वर्णित भ्रातृ–प्रेम, पुत्र–प्रेम, एकपत्नीव्रत, प्रजा प्रेम, मानव–प्रेम आज के मनुष्य के लिए स्पृहणीय है। लांजाइनस ने जिस 'उदात्त' को महत् काव्य की कसौटी माना है, वे सारे तत्त्व 'जनरामायन' में सहज ही प्रवेश पा गये हैं। अतः रचना गाम्भीर्य की दृष्टि से यह एक श्रेष्ठतम कृति है। कवि प्रारम्भ में ही 'जनरामायन' रचने का उद्देश्य बतलाते हुए कहता है–

सत्संगति महँ रुचि अति बाढ़इ, होइ भगति पथ रति विस्तार।
महामंत्र महँ जन मन लागइ, बाढ़इ प्रभु पद प्रीति अपार।।
भारतभूमि धन–धान्य बढ़इ नित, फूलहिं फरहिं सरल परिवार।
कवनेउं कुटुंब कलेस रहइ नहिं, रहइ सुखी सब घर संसार।।

स्पष्ट है कि आज के सामाजिक जीवन की विसंगतियों ने जनमानस को आकुल–व्याकुल कर दिया है। जब समाज में मूल्य–मर्यादा, आदर्श एवं नैतिकता की नये सिरे से स्थापना होगी, तभी वह शान्त, सुखी एवं सन्तुष्ट हो सकेगा। कवि महेश का यही अभीष्ट है, इसीलिए रचना के अन्त में सबकी मंगलकामना करते हुए कवि कहता है–

'मोरे मनहिं उछाह अति रामायन रचि आज।
सब जन बाचहिं मुदित मन, सुधरहिं बिगरे काज।।'

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चतुर्वर्ग में से इसका फल मोक्ष या सद्गति है परन्तु शेष तीनों भी उस फल के साधक होने के कारण इस काव्य में अत्यन्त सफलता के साथ वर्णित हैं।

इस प्रकार चाहे पौर्वात्य या पाश्चात्य शास्त्रज्ञों के नियम–विधान हों, सभी लक्षण 'जनरामायन' में है। कुल मिलाकर समेकित रूप से महाकाव्य के चार महान तत्त्व होते हैं–महान कथानक, महान चरित्र, महान सन्देश एवं महान शैली। ये सभी महानताएँ 'जनरामायन' में विद्यमान हैं।

'जनरामायन' का छन्द–विधान भी सुन्दर हैं कवि ने इस क्षेत्र में सर्वथा नवीन प्रयोग किया है, क्योंकि रामकथा को लोक–छंदों केमाध्यम से लोक–मन से जोड़ने का कार्य सम्भवतः अब तक किसी अन्य रचनाकार ने नहीं किया था। इसमें आवश्यकतानुसार पद, भजन, मंगल, जँतसार, विदाई गीत, गारी, चौताल, कजरी, सोरठा, दोहा, चौपाई, सवैया तथा अन्य छन्दों का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक काण्ड के अन्त में छन्द–परिवर्तन की रूढ़ि का भी पालन किया गया है। चौपाई को प्रमुखता न देकर समूची कृति बोधगम्य एवं प्रवाहपूर्ण 'आल्हा शैली' में रची गयी है।

अब केवल एक विवेच्य बिन्दु शेष बचता है कि इसे महाकाव्य की किस कोटि में रखा जाय अर्थात् यह कथा प्रधान है या चरित्र प्रधान, भाव प्रधान या अलंकृति प्रधान। हम देखते हैं कि वस्तु–वर्णन भी इसमें प्रमुखता के साथ है, पूरा 'जनरामायन' राम के चरित्र एवं भावों का 'विस्तृत दिग्दर्शन' है ही, कवि महेश की कवित्व शक्ति भी श्लाघ्य है अतः इसमें सूक्ष्म संवेदनाओं व अलंकृति को लेकर भी शंका नहीं की जा सकती।

जनकवि महेश का प्रकृति–चित्रण अतीव चित्रात्मक है। उसमें मन को बाँधने की शक्ति है। 'भाव भेद–रस भेद' की दृष्टि से भी यह कृति बहुआयामी है। कवि को रामकथा के मार्मिक स्थलों की विधिवत् पहचान है– जो एक प्रबन्धकार कवि की सबसे प्रमुख विशेषता मानी गयी है। रचना की कथावस्तु शास्त्रानुमोदित कम, लोक–मन के अनुरूप अधिक है। इतिहास के साथ इसमें कल्पना एवं मौलिकता का भरपूर योगदान है। कवि स्वयं लोक एवं शास्त्र–रीति का पण्डित है, अतः उसने अवध की लोक संस्कृति को इसमें जीवन्त रूप में उजागर किया है। रचना में युगीन प्रभाव भी स्पष्ट है। कवि वर्णना–निपुण है। वस्तुतः ऐसी सामर्थ्य किसी को 'शुभप्रसाद' से ही मिलती है। निःसन्देह 'जनरामायन' एक श्रेष्ठ महाकाव्य है और कवि महेश एक रस सिद्ध महाकवि हैं।

●